आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का बदलता स्वरूप
(Changing Pattern of Modern International Politics)

B.A HON's, Part II, 2nd Paper

परिवर्तन संसार का नियम है। जिस तरह से प्रकृति के सारे जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे की आकृति एवं उसकी प्रकृति में बदलाव संभव है ठीक उसी प्रकार संसार के जितने भी देश है उसकी सत्ता तथा संस्था में बदलाव देखने को मिलता है। वर्तमान समय में कोरोना वायरस महामारी का दुरागमन हो जाने से संसार में आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, बौद्धिक, एवं राजनीतिक गिरावट विश्व के परिदृश्य को ही बदल कर रख दिया है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विषय जटिल हो गया है इसकी भावी दिशा के विषय में कोई पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के बदलते हुए आधुनिक स्वरूप के संबंध में स्टुअर्ट चेज (Stuart Chase) का कथन आज भी प्रासंगिक प्रतीत हो रहा है। उनका कहना है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति "काबू से बाहर होनेवाली एक्सप्रेस रेलगाड़ी (An express train out of control) है।" जिन विभिन्न घटनाओं के चलते आधुनिक परिस्थिति उत्पन्न हुई है, वे निम्नलिखित है :-

(i) नये सम्प्रभु राज्यों की संख्या में वृद्धि :- (Increase in the number of new sovereign States) :- 20 वी शदी के शुरुआती दौर तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अर्थ यूरोप की राजनीति से लगाया जाता था, क्योंकि संसार के अन्य देश किसी न किसी यूरोपीय राष्ट्र के अधीन थे। द्वितीय विश्वयुद्ध ने समस्त यूरोपीय राष्ट्रों को आन्दोलित कर दिया। अपने उपनिवेश खोने लगे। जिसके कारण अनेक सम्प्रभु राज्यों का उदय हुआ। 1945 में संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों की संख्या 51 थी जो 2013 में 193 हो गई। सम्प्रभु राज्यों की संख्या में वृद्धि हो जाने से अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का रंगमंच अब केवल यूरोप ही नहीं रहा, एशिया एवं अफ्रीका के विभिन्न देश भी हो गए। अब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र पूरा विश्व हो गया है।

(ii) जनसंख्या में वृद्धि एवं आर्थिक विकास (Growth in population and economic development) :- नवोदित राष्ट्रों की जनसंख्या विश्व के लिए संकट बन गया। नवोदित राष्ट्रों के पास पर्याप्त संसाधन का अभाव के कारण आर्थिक संकट उत्पन्न होने लगा। बेरोजगारी और दरिद्रता की वृद्धि विकराल रूप धारण कर लिया। उन्नत राष्ट्र जब विकसित या विकासशील राष्ट्रों की आरामदायक जिन्दगी जीते

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

हुए देखा तब उनके मन में भी सम्पन्न बनने की प्रेरणा जागने लगी और गरीबी की खाई को पाटकर अमीरी की सीढ़ियों तक पहुँचने को व्याकुल हो जाते हैं। इस प्रकार आज जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ समुचित आर्थिक प्रगति, जीवन स्तर के उन्नयन, कृषि और उद्योग धन्धों के संतुलित विकास आदि की समस्याओं का उन्हें सामना करना पड़ता है। इस प्रकार उग्र राष्ट्रवाद और आर्थिक पिछड़ेपन ने ऐसी अनेक समस्याओं को जन्म दिया है, जिनसे विश्व राजनीति बड़े पैमाने पर प्रभावित हुई है।

(iii) रंगभेद (Apartheid) :- रंगभेद की समस्या ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में घृणा, द्वेष, ईर्ष्या एवं शत्रुता का वातावरण उत्पन्न कर रखा है। यूरोप की गोरी जातियों की तथाकथित श्रेष्ठता का दंभ आज कोई सहने को तैयार नहीं है। लेकिन व्यवहार में यूरोप की गोरी जातियाँ काली जातियों से घृणा करती हैं। अफ्रीका में रंगभेद चरम सीमा पर पहुँच गया था, अल्पसंख्यक गोरे बहुसंख्यक कालों पर जबरन शासन जमाए हुए थे। रोडेशिया में भी इसी श्वेत-अश्वेत नीति का परिणाम था। इससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा।

(iv) प्रशासनिक स्थिरता (Administrative Stability) :- नवोदित राष्ट्रों के समक्ष अन्य समस्याओं के अलावा प्रशासनिक स्थिरता की भी समस्या है। चूंकि ये राष्ट्र वर्षों की गुलामी के बाद स्वतंत्र हुए हैं इसलिए वहाँ राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिरता उत्पन्न नहीं हो पाई है। शासन व्यवस्था चुस्त न रहने के कारण इन देशों में बार-बार क्रान्तियाँ उत्पन्न होने की संभावना बनी रहती है। अफ्रीकी देशों में ऐसी स्थितियाँ विराजमान हैं। एशिया महादेश में पाकिस्तान और बांग्लादेश में अनेक बार सैनिक क्रांतियाँ हो चुकी हैं।

(v) शस्त्रीकरण (Armament) :- नवोदित राष्ट्र अपनी रक्षा व्यवस्था को आधुनिक और सुदृढ़ बनाने भी हैं। 20वीं शताब्दी में शस्त्रास्त्रों का विकास इतनी तेजी से हुआ कि ये राष्ट्र अपने को असुरक्षित अनुभव करने लगे। परिणामस्वरूप इन्हें विकसित राष्ट्रों से अनुबंध तथा समझौते करने पड़े। आर्थिक और सैनिक पिछड़ापन रक्षा व्यवस्था को आधुनिकता प्रदान करने में रोड़ा साबित हो रहा है जिसका प्रभाव अन्य देशों पर पड़ रहा है।

(vi) परमाणु शक्ति का विकास और उसका प्रभाव (Development of atomic power and its effects) :- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय जगत में परमाणु शक्ति के विकास और उसके प्रयोग ने एक नयी समस्या उत्पन्न कर दी। इससे पहले परंपरागत शस्त्रास्त्रों से युद्ध होते थे। वर्तमान पहले से भिन्न है। ताप-नाभिकीय आयुधों का प्रभाव बड़े और छोटे राष्ट्रों पर अलग-अलग रूपों में दिखाई पड़ता है। जहाँ बड़े राष्ट्र खुलेआम आपस में युद्ध करने से बच रहे हैं और उन युद्धों का स्थान संघर्ष ले रहा है और वे विश्व के ऐसे क्षेत्रों में लड़े जा रहे हैं जहाँ प्रभाववृद्धि की होड़ सी लगी है, वहीं छोटे राष्ट्रों की स्थिति भिन्न है। म्यांमार, कंबोडिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देशों को ले सकते हैं जो चीन का विरोध करने का साहस नहीं कर पा रहे हैं। भारत और पाकिस्तान ने भी परमाणु बम का विस्फोट कर अपने को

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

परमाण्विक राष्ट्रों में शामिल कर लिया है। ताप नाभिकीय आयुधों के प्रभाव ने विश्व के छोटे तथा अन्य विकासशील राष्ट्रों को चिंतित कर दिया है। इस प्रकार सैनिक श्रेष्ठता स्वयं ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक उद्देश्य बन गई है।

(VII) जनमत का प्रभाव (Influence of public opinion) :- वर्तमान युग लोकतंत्र का युग है। नवोदित राष्ट्रों में से अधिकांश राष्ट्रों ने लोकतांत्रिक शासन प्रणाली अपनायी है। अधिकांश उन्नत यूरोपीय देशों जैसे इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका आदि ने भी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली अपनायी है। लोकतांत्रिक देशों के नेता अपनी घरेलू और विदेश नीतियाँ निर्धारित करते समय अपने-अपने देशों के जनमत की उपेक्षा नहीं कर सकते। इसलिए आज कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का किलाधार से बँधकर नहीं रहना चाहता, बल्कि अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं हितों के अनुकूल स्वतंत्र पथ पर चलना चाहता है। आज के युग में छोटा से छोटा राष्ट्र भी बड़े से बड़े राष्ट्र के साथ समानता के स्तर पर व्यवहार करना चाहता है।

(VIII) शांतिवादी आन्दोलन (Pacifist movement) :- शांतिवादी आंदोलन 19वीं शदी में प्रारंभ हुआ था और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उसकी गति में वृद्धि आई। 21वीं शदी में में शांतिवादी आन्दोलन ने एक नई सार्थकता ग्रहण कर ली है क्योंकि विदेश नीति के सभी फैसलों की पृष्ठभूमि में शांति का ध्यान रखना आवश्यक हो गया है जिसका प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप पर भी पड़ा है। आज शांति की समस्याओं को छोड़कर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन हो ही नहीं सकता। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का एकमात्र उद्देश्य यह है कि हम युद्ध से बचें और शांति कायम रखें।

(IX) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में हो रहे प्रयास (International organizations and attempts being made for International Integration) :- शांति की चिंता का अन्तर्राष्ट्रीय संगठन से घनिष्ठ संबंध है। पूरे राष्ट्र के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन शांति कायम रखने पर सोच करके कि किसी तरह की नीति का निर्धारण हो ताकि विश्व समुदाय अमन-चैन का साँस ले। आज राष्ट्र एक तरफ अपनी शक्ति में वृद्धि करना चाहते हैं तो दूसरी तरफ अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था कायम रखने के लिए प्रयास भी किए जा रहे हैं। इस अवस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में एक नए प्रकार के तनाव को उत्पन्न कर दिया है। शक्ति बढ़ाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के भीतर संघर्ष जारी है।

(X) क्षेत्रीय संगठन (Regional organization) :- एक दूसरे से भयभीत राष्ट्रों ने अनेक क्षेत्रीय संगठनों को जन्म दिया। 1945 के बाद अमेरिका की प्रत्येक योजना को सोवियत संघ और सोवियत संघ की प्रत्येक योजना को अमेरिका ने काटना प्रारंभ किया। इस प्रकार सोवियत संघ और अमेरिका में युद्ध छिड़ गया। साम्यवादी और लोकतांत्रिक दोनों गुटों में शस्त्र संचय एवं प्रभाववृद्धि की होड़ लग गयी। दोनों निकट अधिकाधिक

राष्ट्रों को अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने के लिए अपनी वैदेशिक नीति के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के आर्थिक, सांस्कृतिक आदि कार्यक्रमों को साधन रूप में प्रयोग करने लगे। इससे विदेश नीति का स्वरूप पहले की तुलना में काफी जटिल हो गया। इससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की जटिलता और बढ़ती गई। दोनों शक्ति गुटों के पारस्परिक अविश्वास और संदेह ने दोनों को शांतिकाल में भी चैन से नहीं रहने दिया और उन्हें ऐसे अनेक कार्य करने पड़े जो प्रायः युद्धकाल में किए जाते हैं, जैसे बड़े पैमाने पर सैनिक तैयारी, रण योजना, घातक प्रचार नीति, विदेशी सहायता कार्यक्रम पर प्रचुर व्यय आदि।

(XI) पश्चिमी और सोवियत गुटों का विघटन (Disintegration of the western and soviet groups) 20वीं शती के छठे दशक में विश्व के दोनों शक्ति गुटों में विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। 1960 की घटना ने बड़े पैमाने पर चल रहे शक्ति-गुटों को आंदोलित कर दिया। 1960 के बाद इन दोनों गुटों में दरार पड़ गई। अमेरिकी गुट के फ्रांस तथा कुछ अन्य देश नाटो से असंतुष्ट होते गए। इन देशों की तीव्र राष्ट्रीय भावना अन्तर्राष्ट्रीय जगत में उन्हें स्वतंत्र पथ अख्तियार करने को प्रेरित करती थी। दूसरी तरफ साम्यवादी गुट भी ढीला पड़ता गया। 1955 में ही सोवियत राष्ट्रपति ख्रुश्चेव ने भी युगोस्लाविया के इस दावे को स्वीकार कर लिया कि उसे मार्क्सवाद से भिन्न स्वतंत्र नीति अपनाने का अधिकार है। साम्यवादी देश अल्बानिया भी सोवियत संघ के प्रभाव क्षेत्र से बाहर निकल चुका था। उसने सोवियत संघ को एड्रियाटिक सागर के वालोना (Valona) नामक स्थान पर स्थित अपने महत्वपूर्ण पनडुब्बी अड्डे को खाली करने को विवश कर दिया। यह भूमध्य सागर में सोवियत संघ का एकमात्र शक्ति स्थल रह गया था। पुनः 1964 में अल्बानिया ने अपनी राजधानी तिराना में सोवियत संघ द्वारा निर्मित एवं अधिकृत सोवियत दूतावास पर कब्जा कर लिया और सोवियत संघ उसका कुछ नहीं कर सका। इसी तरह हंगरी और चेकोस्लोवाकिया ने 1989 में सोवियत संघ के शिकंजे से अपने को अलग कर लिया। 25 दिसम्बर 1991 को सोवियत संघ का अंत हो गया।

निष्कर्ष (Conclusion):— निष्कर्षतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक गतिशील विषय है। जिसमें ज्वार-भाटा रूपी समुंद्री लहरें प्रगति के पथ पर चलते रहता है। जिस दिन लहरें अपनी आकृति के वास्तविक रूप का त्याग कर देगी उस दिन शायद अन्तर्राष्ट्रीयता का अंत हो जायेगा, परन्तु यह कदापि संभव नहीं है। इस प्रकार विश्व जगत जब तक रहेगा, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तब तक कायम रहेगी।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कॉलेज, डुमराँव
दिनांक - 09/05/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA